ईश्वरीय पूर्वनियति में विश्वास (2 का भाग 2)

रेटिंग:

विवरण: ??? ?? ??? ????? ?? ???? ?? ?? ????????? ?? ???? ??, ?? ???? ?? ????? ?? ?????????? ???? ???? ???? ????? ?? ?? ??? ???? ??? ??? ???

श्रेणी: पाठ › इस्लामी मान्यताएं › आस्था के अनुच्छेद

द्वारा: Imam Mufti

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

आवश्यक शर्तें

·इस्लाम के स्तंभों और आस्था के अनुच्छेदों का परिचय (2 भाग)।

उद्देश्य

·ईश्वरीय पूर्वनियति के दूसरे 2 घटकों को जानना जिसमे शामिल है, सब कुछ अल्लाह की इच्छा से होता है और उसकी क्षमता परिपूर्ण है, और यह कि अल्लाह ही है जिसने सब कुछ बनाया है।

·इच्छा की स्वतंत्रता के प्रश्न के संबंध में भ्रम को स्पष्ट करना और दूर करना।

अरबी शब्द

·क़द्र - ईश्वरीय पूर्वनियति।

(3) अल्लाह की इच्छा हमेशा पूरी होती है, और उसकी क्षमता परिपूर्ण है।

अल्लाह जो कुछ चाहता है वह होता है, और अल्लाह जो कुछ नहीं चाहेगा वह नहीं होगा। आसमान में या ज़मीन पर अल्लाह की मर्जी के बिना कुछ भी नहीं होता है। इसलिए, ब्रह्मांड में जो कुछ भी होता है वह अल्लाह की इच्छा से होता है, चाहे वह एक दैवीय कार्य हो या सृष्टि का कार्य:

“यदि वह ऐसा चाहता तो वास्तव में आप सभी का मार्गदर्शन करता।” (क़ुरआन 6:149)

अगर हम कहें कि अल्लाह की मर्जी के बिना कुछ होता है, तो इसका मतलब यह होगा कि चीजें अल्लाह की मर्जी के बिना हो सकती हैं, और यह अल्लाह की शक्ति और इच्छा में कमी करना होगा। बल्कि, जो कुछ भी होता है वह तभी हो सकता है जब अल्लाह चाहे। अगर वह ऐसा नहीं चाहता, तो यह कभी अस्तित्व में नहीं आ सकता था।

इसी तरह सृष्टि के कार्य अल्लाह की इच्छा से होते हैं:

“तथा तुम विश्व के पालनहार के चाहे बिना कुछ नहीं कर सकते।” (क़ुरआन 81:29)

अल्लाह की मर्जी के बिना कोई भी कुछ नहीं कर सकता, अगर वह ऐसा नहीं चाहता, तो यह कभी न होता।

(4) अल्लाह ने ही सब कुछ बनाया है।

“उसने सब कुछ बनाया है, और इसे ठीक वैसा बनाया जैसा वो चाहता था।”

“उसने प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की, फिर उसे एक निर्धारित रूप दिया।” (Quran 25:2)

इसमें हमारी विशेषताएं और हमारे कर्म शामिल हैं।

इंसानों को और उनके द्वारा किए गए कार्यो और कथनों को अल्लाह ने बनाया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि किसी व्यक्ति के कार्य और कथन उसकी विशेषताएं हैं; यदि व्यक्ति एक रचना है, तो उसकी विशेषताएं भी अल्लाह की ही रचना हैं।

“जबकि अल्लाह ने पैदा किया है तुम्हें तथा जो तुम करते हो।” (क़ुरआन 37:96)

हमें शारीरिक क्षमता और एक विकल्प दिया जाता है। हमारी क्षमताएं जैसे बुद्धि और स्मृति उसी तरह भिन्न होती हैं जैसे हमारी विशेषतायें जैसे ऊंचाई, वजन और रंग भिन्न है। इसके अलावा, हमें इच्छा की स्वतंत्रता दी गई है और हमारे पास एक विकल्प है।

यदि इनमें से एक न हो, तो कार्य नहीं किया जा सकता। जिसने विकल्प और क्षमता दी है वह अल्लाह है, कारण और प्रभाव को बनाने वाला। चूंकि अल्लाह ने हमें क्षमता और विकल्प दोनों दिए हैं, इसलिए हम जो कार्य करते हैं वह भी अल्लाह द्वारा बनाया गया है।

मानव की इच्छा की स्वतंत्रता

ईश्वरीय पूर्वनियति (भौतिक और आध्यात्मिक जीवन दोनों में मानव का प्रत्येक कार्य पूर्वनिर्धारित है) में इस्लामी विश्वास मानव मामलों में दैवीय हस्तक्षेप से इनकार किए बिना मानव स्वतंत्रता को बरकरार रखता है। यह मनुष्य की नैतिक स्वतंत्रता और जिम्मेदारी के सिद्धांत को कमजोर नहीं करता है। मनुष्य एक असहाय प्राणी नहीं है जो नियति के अनुसार कार्य करता है। यह मानना गलत है कि भाग्य का कार्य अंधा, मनमाना और अथक है।

सब पहले से पता है, लेकिन आजादी भी दी गई है।

मनुष्य अपने कार्यों के लिए जिम्मेदार है। जीवन के सामान्य मामलों के प्रति उदासीनता के लिए सुस्त राष्ट्र और व्यक्ति खुद जिम्मेदार है, अल्लाह नही। मनुष्य नैतिक कानून का पालन करने के लिए बाध्य है; और उसे उस कानून का उल्लंघन करने या उसका पालन करने के लिए योग्य दंड या इनाम दिया जायेगा। हालांकि, यदि ऐसा है, तो कानून को तोड़ने या उसका पालन करने की शक्ति मनुष्य के पास होनी चाहिए। अल्लाह हमें किसी चीज़ के लिए तब तक ज़िम्मेदार नहीं ठहराएगा जब तक कि हम उसे करने में सक्षम न हों:

“अल्लाह किसी भी इंसान पर उतना बोझ नहीं डालता जितना वह सहन न कर सके।” (क़ुरआन 2:286)

“तो अल्लाह से डरते रहो, जितना तुमसे हो सके तथा अल्लाह के प्रति अपना कर्तव्य निभाओ” (क़ुरआन 64:16)

हर कोई कुछ करने के लिए मजबूर होने और स्वतंत्र होने के बीच का अंतर जानता है; इसे करने का विकल्प होना, किसी के सिर पर बंदूक रखने और निर्णय लेने में स्वतंत्र होने जैसा है।

कुछ लोग गलती से सोचते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के भविष्य के जीवन की ईश्वरीय पूर्वनियति अल्लाह द्वारा उसके सभी विवरणों में इतनी सख्ती से पूर्वनिर्धारित है कि वह अपनी मर्जी या इच्छा से घटना को बदल नहीं सकता। यह नियति थी या नहीं, यह जानने से पहले ही वो विश्वास को अस्वीकार करने या

पाप करने के लिए सामान्य ज्ञान को हरा देता है! धार्मिकता और बुराई के बीच चुनने की क्षमता हर किसी के पास है, तो कोई व्यक्ति जानबूझकर विनाश का रास्ता कैसे चुन सकता है और ईश्वरीय पूर्वनियति (क़द्र) को इसका जिम्मेदार बता सकता है? अच्छे पथ पर चलना और इसे अपने भाग्य का श्रेय देना अधिक उपयुक्त है। अल्लाह अनंत काल से अचूक निश्चितता के साथ जानता है कि कौन बचेगा और कौन बर्बाद होगा; जबकि अल्लाह के पास यह अचूक पूर्वज्ञान है, हम अपनी ओर से इस बारे में बिल्कुल निश्चित आश्वासन नहीं दे सकते कि हम कैसे ख़त्म होंगे। पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ने सच कहा जब उन्होंने कहा:

“जो आपके लिए फायदेमंद है उसे ढूंढो और अल्लाह से मदद मांगो। निराश न हो, और यदि कोई बात तुम्हे दुःख देती है, तो यह मत कहना कि 'अगर मैंने ऐसा किया होता तो', क्योंकि 'अगर' कहने से शैतान के लिए दरवाजे खुल जाते हैं।”

“यदि वह सफल लोगों में से है, तो सफल लोगों के कर्म उनके लिए आसान हो जाते हैं।” (सहीह अल-बुखारी, सहीह मुस्लिम)

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/index.php/hi/articles/40

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।